ए गुण गणिया में निद्रा मंझार, नहीं तो एम केम गणूं मारा जीवना आधार।
हवे वातडियो करसूं इछा तमतणी, आंही जाग्यानी मूने हाम छे घणी।। ४८ ।।

इन गुणों की गिनती मैंने झूठे शरीर से माया में की है। नहीं तो मेरे प्राणों के आधार के गुण क्या ऐसे गिने जाते हैं? हे धनी! अब आपकी इच्छानुसार ही बात करूंगी। इस संसार में जागने की मुझे यहां प्रबल इच्छा है।

वाला तमे आव्या छो माया देह धरी, साथ तणी मत माया ए गई फरी।
हवे अनेक हांसी थासे जाग्या पछी घरे, ज्यारे साथे माया मांगी कहे अमने सूं करे। ४९ ।।

हे वालाजी! तुम देह धारण कर इस माया में आए हो। साथ की बुद्धि माया में बदल गई है। घर में जागने पर बड़ी हंसी होगी, क्योंकि सब सुन्दरसाथ ने खेल मांगने से पहले कहा था कि माया हमारा क्या करेगी?

तमे ततखिण लीधी अमारी खबर, लई आव्या तारतम देखाड्या घर।
आपण जाग्या पछी हांसी करसूं जोर, घरने विसारी माया ए कीधा चोर।। ५० ।।

हे धनी! आपने तुरन्त ही हमारी यहां खबर ली और जागृत बुद्धि का ज्ञान देकर घर की पहचान कराई। अब परमधाम में जागने के बाद खूब हंसी करेंगे। माया ने हमें अपने घर को भुलाकर चोर की तरह बिठा रखा है।

हवेने करसूं जाग्या पछी वात, कांई अमल चढ्यूं छे साथने निघात।
तारतम केहेता हजी वले न सार, नहीं तो अनेक विधे कह्यूं प्राणने आधार।। ५१ ।।

अब घर में जागने के बाद आपसे बात करूंगी। यहां सब साथ माया के नशे (बहुत अधिक) में बेहोश पड़े हैं। तारतम से भी इनको होश वापस नहीं आ रहा है। प्राणाधार ने इनको तरह-तरह से समझाया भी है।

इंद्रावती लिए भामणा गुण जेटला, तमे आंही सुख दीधा अमने एटला।
घरना सुखनी आंही केही कहूं वात, हवे सुख घरना नी घेर करसूं विख्यात।। ५२ ।।

हे धनी! आपने यहां मुझे इतने अधिक सुख दिए हैं। जितने आपके गुण हैं। यदि उतनी बार भी मैं कुर्बान हो जाऊं तो भी कम है। फिर परमधाम के सुख की बात यहां क्या करूं? घर के सुख की बातें घर पर ही करेंगे।

चरणे लाग कहे इंद्रावती, गुण न देखे किन एक रती।
धणी जगाडी देखाडसे गुण, हांसी थासे त्यारे अति घण।। ५३ ।।

श्री इन्द्रावतीजी चरणों में लगकर कहती हैं कि किसी ने भी वालाजी की मेहर को नहीं देखा। जब वालाजी परमधाम में जगाकर अपनी मेहर (कृपा) बताएंगे तो बहुत बड़ी हंसी होगी।

।। प्रकरण ।। १२ ।। चौपाई ।। ३२७ ।।

सांभलो साथ मारा सिरदार, वचन कहूं ते ग्रहो निरधार।
एटला गुण आपणसूं करी, बेठा आपणमां माया देह धरी।। १ ।।

हे मेरे श्रेष्ठ सुन्दरसाथ! सुनो, मैं जो वचन कहती हूं उनको ग्रहण करो। धनी ने हमारे ऊपर बड़ी मेहर की है और हमारे बीच माया में तन धारण करके बैठे हैं।

Nijanand App

भरम भाजो वचन जोई करी, निद्रा घेन मूको परहरी।
श्री धामतणां धणी केहेवाए, ते आवी बेठा आपण मांहें।। २ ।।

इन वचनों को विचारकर अपने संशय मिटाओ और नींद के नशे (माया का नशा) को त्यागो। अपने धाम धनी हमारे बीच में बैठे हैं।

हवे सेवा कीजे अनेक विध करी, अने आपण काजे आव्या फरी।
वली अवसर आव्यो छे हाथ, चेतन करी दीधो प्राणनाथ।। ३ ।।

अब इन धाम धनी की हर तरह से सेवा करें, क्योंकि वह हमारे कारण ही दुबारा माया में तन धारण करके आए हैं। फिर से अवसर अपने हाथ आया है। अपने श्री प्राणनाथ हमको जगा रहे हैं।

ए ऊपर हवे सूं कहुं, श्री वालाजीना चरणज ग्रहुं।
कर जोडी करूं विनती, अने अलगी न थाऊं चरण थकी।। ४ ।।

इसके ऊपर अब क्या कहूं? सिवाय इसके कि वालाजी के चरणों को पकड़ लूं और हाथ जोड़कर विनती करूं कि हे धनी! अब इन चरणों से कभी भी अलग न रहूंगी।

।। प्रकरण ।। १३ ।। चौपाई ।। ३३१ ।।

जाटी भाषा में–प्रबोध

मूंजा अंध अभागी जीव जोर रे, तूं कीं सुतो हित।
पर पर धणिए जगाइया, तोके घर न सूझे कित।। १ ।।

हे मेरे अन्धे अभागे जीव! तू यहां क्यों सोता है? ताकत लगाकर उठ। धनी ने तुझे तरह-तरह से जगाया फिर भी तुझे घर की सुध नहीं आई।

अगेनी तू कुरो केओ, जडे पिरी हल्या साणे।
से अजां न उथिए अकरमी, भूंडा सुते हित केही सांगायसे।। २ ।।

आगे भी तूने क्या किया? जब प्रीतम अपने सामने चले गए। हे अकर्मी जीव! तू अभी तक नहीं उठता। हे पापी! तू यहां किस (सम्बन्ध) कारण से सोया पड़ा है?

पर पोतेजी न्हार तूं निखर, वलहो न डिसे अजां छेह।
अवगुण न डिसे पांहिंजा, पिरी मेहेर करी वरी एह।। ३ ।।

हे दुष्ट! तू अपनी तरफ देख। धनी की जुदाई तुझे अभी भी नहीं दिखती। तू अपने अवगुणों को नहीं देखता। धनी ने फिर से कृपा की है।

वभिरकां पिरी तो कारण, आया माया मंझ।
को न सुजाणे सिपरी, न तां थींदिए डूरण डंझ।। ४ ।।

दूसरी बार प्रीतम तुम्हारे वास्ते माया में आए हैं। तुम अपने प्रीतम की पहचान क्यों नहीं करते? नहीं पहचाना तो कठिन से कठिन दुःख होगा।

पांण पांहिंजो पस तूं, अंख उघाडे न्हार।
खीर पाणी जी परख पधरी, हिन तारतम महें विचार।। ५ ।।

तू स्वयं अपनी तरफ आंख खोलकर देख, तो जागृत बुद्धि (तारतम) के विचार से दूध-पानी की (माया-ब्रह्म) पहचान साफ है।

Nijanand App